E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2020; 2(2): 72-74
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 08-05-2020
Accepted: 10-06-2020

डॉ संजय कुमार सिंह
राजनीतिक विज्ञान, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

डॉ दीना रबिदास
राजनीतिक विज्ञान, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

डॉ आशुतोष नन्दन
समाज शास्त्र तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ संजय कुमार सिंह
राजनीतिक विज्ञान, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्दालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

पर्यावरण संकट और उसका निदान

डॉ संजय कुमार सिंह, डॉ दीना रबिदास एवं डॉ आशुतोष नन्दन

प्रस्तावना

पर्यावरण (Enviroment) अंग्रेजी शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है। 'परि' जो हमारे चारों ओर है, 'आवरण' जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत ईकाई है, जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रीय अबादी को प्रभावित करते है तथा उनके रूप, जीवन और जीविका को तय करते है।

सामान्य अर्थो में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अन्दर सम्पादित होती है तथा हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते है। इस प्रकार एक जीवधारी ओर उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय संबंध भी होता है।

पर्यावरण के जैविक संघटकों में सुक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े–मकोड़े, सभी जीव–जन्तु और पेड़–पौधे आ जाते है, और इसके साथ ही उनसे जुड़ी सभी जैव क्रियाऐं और प्रक्रियाऐं भी है। जैविक संघटको में जीवन रहित तत्व और उनसी जुड़ी प्रक्रियाऐं आती है, जैसे– चट्टाने, पर्वत, नदी, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

सामान्यतः पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है और मनुष्य को एक अलग इकाई और चारो ओर व्याप्त अन्य समस्त चीजों को उसका पर्यावरण घोषित कर दिया जाता है। किन्तु यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि अभी भी इस धरती पर बहुत से मानव सभ्याताऐं है, जो अपने को पर्यावरण से अलग नहीं मानती और उनकी नजर में समस्त प्रकृति एक ही इकाई है, जिसका मनुष्य भी एक हिस्सा है। वस्तुतः मनुष्य को पर्यावरण से अलग मानने वाले वे है जो तकनीकी रूप से विकसित है और विज्ञान और तकनीक के व्यापक प्रयोग से अपने प्राकृतिक दशाओं में काफी बदलाव लाने में समर्थ है।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो प्रखण्डों में विभाजित किया जाता है– प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण।

हलांकि पूर्ण रूप से प्राकृतिक पर्यावरण (जिसमें मानव हस्तक्षेप न हुआ हो) या पूर्ण रूपेण मानव निर्मित पर्यावरण (जिसमें सबकुछ मनुष्य निर्मित हो) कहीं नहीं पाए जाते है। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता का द्योतक मात्र है। पारिस्थितिकी और पर्यावरण भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण शब्द का प्रयोग पर्यावास ;भ्इपजंजद्ध के लिए होता है।

तकनीकी मानव द्वारा आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासित के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़–छाड़ के क्रिया–कलापों में प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था या प्रणाली के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो गया है। इस तरह की समस्याऐं पर्यावरणीय अवनयन कहलाती है।

पर्यावरणीय समस्याऐं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्त्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवन शैली के वारे में पुर्नविचार के लिए प्रेरित कर रही है और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा है। मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्त्तनों से नुकसान का कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्यता अपने पर्यावरण के प्रति कितनी जागरूक है, यह आज की ज्वंलत प्रश्न है।

पृथ्वी पर पाये जाने वाले भूमि, जल, वायु, पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तुओं का समूह जो हमारे चारों ओर है– पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण के जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्तःक्रिया करते है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया एक तंत्र में स्थापित हो जाती है जिसे हम पारिस्थितिक तंत्र के रूप में जानते है।

आज पर्यावरण एक जरूरी सबाल ही नहीं बल्कि ज्वंलत मुद्दा बना हुआ है, लेकिन आज लोगों में इसे लेकर कोई जागरूकता नहीं है।

ग्रामीण समाज को छोड़ दे तो भी महानगरीय जीवन में इसके प्रति खास उत्सुकता नहीं पाई जाती। परिणाम स्वरूप पर्यावरण सुरक्षा महज एक सरकारी एजेण्डा ही बन कर रह गया है। जबकि यह पूरे समाज से बहुत ही घनिष्ट संबंध रखने वाला सवाल है। जबतक इसे प्रति लोगों में समाजिक लगाव पैदा नहीं होता पर्यावरण संरक्षण एक दूर का सपना बना रहेगा। पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति से है। अपने परिवेश में हमें तरह–तरह के जीव–जन्तु, पेड़–पौधों तथा अन्य सजीव तथा निर्जीव वस्तुऐं पाते है। ये सब मिलकर पर्यावरण की रचना करते है। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे– भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान आदि में विषय के मौलिक सिद्धांतों तथा उनसे संबंध प्रायोगिक विषयों का अध्ययन किया जाता है। परन्तु आज की आवश्यकता यह है कि पर्यावरण के विस्तृत के साथ–साथ इससे संबंधित व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया जाय। आधुनिक समाज को पर्यावरण से संबंधित समस्याओं की शिक्षा के व्यापक स्तर पर दी जानी चाहिए। साथ ही इससे निपटने के बचावकारी उपायों की जानकारी आवश्यक है। आज के मशीनीकरण युग में हम ऐसी स्थिति से गुजर रहें है। प्रदूषण एक अभिशाप के रूप में सम्पूर्ण विश्व में गम्भीर चुनौती की दौर से गुजर रहा है। यद्यपि हमारे पास पर्यावरण संबंधी पाठ्य सामग्री की कमी है तथापि संदर्भ सामग्री की कमी नहीं है। वास्तव में आज पर्यावरण से संबंध उपलब्ध ज्ञान को व्यावहारिक बनाने की आवश्यकता है ताकि समस्या को जन–मानस सहज रूप से समझ सके। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज को उसके कर्त्तव्य तथा दायित्व का एहसास होना आवश्यक है। इस प्रकार के समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है। वास्तव में सजीव तथा निर्जीव दो संघटक मिलकर प्रकृति का निर्माण करते है। इन संघटको के मध्य एक महत्वपूर्ण रिश्ता यह है कि अपने जीवन निर्वाह के लिए परस्पर निर्भर रहते है। जीव जगत में यद्यपि मानव सबसे अधिक स्वचेतन एवं संवेदनशील प्राणी है तथापि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति वह अन्य जीव–जन्तुओं, पादप, वायु, जल तथा भूमि पर निर्भर रहता है। मानव के परिवेश में पाए जाने वाले जीव–जन्तु, पादप, वायु, जल तथा भूमि पर्यावरण की संरचना करते है।

पर्यावरण संकट के कारणः

पर्यावरण संकट का **प्रथम व सबसे बड़ा** कारण उच्च उपभोक्तावादी संस्कृति है। यह उपभोक्तावादी संस्कृति ऐसे प्रलोभनकारी उद्योग को विकसित करती है, जो कि सेवाओं व वस्तुओं से संबंधित अभिष्ठ इच्छा की पूर्ति करता है। इस उपभोक्ता संस्कृति का मूल उद्देश्य निहित होता है कि वह अधिक से अधिक मात्रा में अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण संसाधनों का दोहन कर सके। वह इसे जन्मजात अधिकार के रूप में देखता है तथा भौगोलिक अध्येता भी इस दिशा में पर्यावरण व भविष्यवाद की द्वंदता को स्वीकार करते है, क्योंकि व्यक्तियों की आर्थिक आतमियता प्राकृतिक उद्देश्यों को नकारती है।

दूसरा कारण वनों का दिनों–दिन कम होना है। दुनिया का कुल भूक्षेत्र का करीब 30% वन क्षेत्र है। दुनिया भर में 9.8 अरब एकड़ में फैले वन क्षेत्र का लगभग दो–तिहाही भाग रूस, ब्राजील, कनाडा, अमेरिका, चीन, आस्ट्रेलिया, कांगो, इण्डोनेशिया, अंगोला तथा पेरू जैसे 10 देशों में सिमटा हुआ है। बीसवी शताब्दी के आखरी दशक में ही प्रतिवर्ष करीब 3.8 करोड़ एकड़ वन क्षेत्र प्रति वर्ष समाप्त होता आ रहा है। यह रफ्तार रही तो आने वाले 40–50 वर्षो में धरती से पेड़–पौधों का नामोनिशान मिट जायेगा। इन वनों की विनाशलीला में लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

तीसरा कारण– जब प्राकृतिक श्रोत सीमित हो तथा जनसंख्या सीमित हो, तो यह संशाधन का कार्य करती है लेकिन इनके मध्य असंतुलन पर्यावरण के लिए संकट है। जनसंख्या जब बिना प्रभावकारी, राजनीतिक, आर्थिक नीति के तीब्र गति से बढती है तब साधन सीमित हो जाते है तथा भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं में कमी तथा साथ ही साथ जीवन प्रत्याशा में कमी, मृत्यु दर में बृद्धि होती है। जनसंख्या के दबाव में वनों का दोहन, भूमि का अधिक अधिग्रहण, ओजोन क्षरण, जैव विविधता में क्षरण, ग्रीन हाउस गैसों में बृद्धि, जल प्लावन लबणीकरण, उसरीकरण, अम्ल वर्षा की भूमिका बढती जाती है।

चौथा कारण– जैसे–जैसे समाज में और विशेषतः प्रौद्योगिक का विकास हो रहा है, वैसे–वैसे मनुष्य और पर्यावरण के मध्य अन्तःक्रिया ने एक खतरनाक मोड़ ले लिया है। वायु, जल, वायुमण्डल, वन, नदियाँ, पौधे और प्रकृति के अनेक तत्वों को प्रौद्योगिक क्षमता ने प्रभावित किया है। क्योंकि इन्हीं के बदौलत प्राकृतिक संसाधनो का दोहन हुआ है और इनके अति दोहन ने पर्यावरण के सामंजस्य को विचलित कर दिया है। आज स्वास्थ्य सुरक्षा भावना की कमी जैसे समस्याऐं प्रार्दुभूत हुई है जो पुर्णतया औद्योगिक विकास का प्रतिफल है। इस प्रौद्योगिक विकास की बदौलत ही आज इस जेनेटिकली मॉडीफाइड खाद्यान पर निर्भर हो गए है। इसने मानव स्वास्थ्य को खराब कर दिया है व शारीरिक तथा मानसिक असुरक्षा तंत्र का विकास किया है। इस प्रौद्योगिक विकास ने रासायनिक स्राव के माध्यम से वातावरण को प्रदूषित किया है।

पाँचवा कारण– जनसंख्या तथा प्रौद्योगिकी विकास द्वारा प्रादूर्भूत प्रदूषण के श्रोतों के साथ पर्यावरण के संकट में मानवीय कारण को अनदेखा नहीं किया जा सकता। पर्यावरण की स्वच्छता के वारे में नगरवासियों तथा उद्योगपतियों की लापरवाही 'सूचना का अभाव', स्थानीय अधिकारियों की पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रमाणिक मानदंडों के प्रति लापरवाही, उपलब्ध जमीन पर निहित स्वार्थ समूहों का आधिपत्य और जन सुविधाओं जैसे शौचालयों, गटर, कूड़ा करकट इकट्ठा करने की पेटियाँ इत्यादि की पंगु स्थिति वातावरण में इतना प्रदूषण फैलाती है कि स्वच्छ पर्यावरण का अभाव हो जाता है तथा स्वस्थ्य रहन–सहन एक प्रकार से चुनौती बन जाता है।

पर्यावरण संकट के निदानः

विश्व पर्यावरण दिवस संयुक्त राष्ट्र में पर्यावरण के लिए मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है, पर्यावरण और जीवन का अनोखा संबंध है। इन्हीं मायनों में पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जरा सी इच्छा रख और थोड़े से प्रयास से पर्यावरण को सुरक्षा और संरक्षण दे सकता है। पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्त्तन ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया हुआ है इस समस्या से उबटने के लिए पूरी दुनिया को एक होने की जरूरत है। दुर्भाग्य से गरीब देशों को जो मुख्य रूप से अपने अस्तित्व के लिए प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करते है, उन्हें गरीबी से निपटने के लिए पर्यावरण संबंधी चिन्ताओं से निपटने में सक्षम होने के लिए मदद की जरूरत है।

तीन आवश्यक बातें जो ध्यान में रखना चाहिए–

कम उपयोग करना – पुनरावृत्ति करना – पुनः उपयोग करना। लगभग सभी चीजों की पुनरावृत्ति की जा सकती है, ऐसे उत्पादों को खरीदने की कोशिश करें जो पुनरावृत्ति करने में सक्षम हो। कांच, कागज, प्लास्टिक या धातु इन सभी चीजों को फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है। खाली जार, शराब की बोतलें,

टुटा चश्मा और अन्य कोई वस्तु जो कांच से बनी हों और अब उपयोगी नहीं है, ऐसी चीजों की पुनरावृत्ति होनी चाहिए। इसके अलावा पुराने अखबारों, खराब कागज, गत्ता आदि जिनकी कोई जरूरत नहीं सभी की पुनरावृत्ति की जानी चाहिए।

पानी की खपत कम करना

जल ही जीवन है, स्वच्छ और ताजा पानी समय के साथ और अधिक से अधिक कीमती होता जा रहा है और अगर हम अब तक इसे बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे है, तो भविष्य में पानी, सोने से अधिक कीमती होगा। इसलिए ये महत्वपूर्ण है कि जो कुछ भी हम कर सकते है इसे बचाने के लिए और पानी के प्रदूषण को रोकने के लिए वो अधिक प्रयास करना चाहिए। जब भी हम ब्रश करें नल बंद रखे, स्नान के समय कम पानी खपत करे। वाशिंग मशीन का उपयोग केवल तब करें जब कपड़े ज्यादा हो, तेल और रंग नालियों में नहीं बहाना चाहिए क्योंकि वे नादियों और अंत में समुद्र को गंदा करता है।

बिजली के उपयोग को कम करें

एक बार जब हम बिजली के उपकरण का उपयोग कर चुके हो तब उसे बंद कर दें, इससे आप अपने बिजली के बिल को ही नहीं बल्कि उर्जा को भी बचाऐंगे। उर्जा को बचाने के लिए आजकल स्म्क ठनसइ आ गए है उन्हें अपने घर के बल्ब से बदल दें। एक बार जब हम कार्यालय छोड़ देते है, अपने कम्प्यूटर और मॉनीटर को बंद करके निकले। इस तरह करने से आप बिजली की खपत को कम करने में मदद करेंगे।

पौधे लगाओ

पेड़ ऑक्सीजन का सबसे बड़ा श्रोत है और हम उन्हें उगाने के बजाय काट देते है। हर व्यक्ति एक पेड़ लगाए तो जीवन में काफी सुधार होगा। हवा साफ होगी। पेड़ों की वापसी साामन्य हो जाएगी। प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग और ग्रीन हाउस प्रभाव कम हो जाएगा।

सब्जियाँ उगाना

आज हम जो सब्जियाँ खाते है वो रसायनों और कीटनाशकों के साथ उगाई जाती है। अगर हम रसायनों और कीटनाशकों का उपयोग किए बिना स्वयं सब्जियाँ लगाए, तो हमें अच्छी सब्जियाँ खाने को मिलेगी। ये हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए फायदेमंद है।

धुम्रपान की लत को छोड़ना–

धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ये हृदय रोगों को बढावा देता है। ये हवा के प्रदूषण को भी बढा देती है। घुम्रपान न करने से वायु प्रदूषण को कम करके पर्यावरण को बचाया जा सकता है।

वाहन का ख्याल रखना

आज वाहनों के कारण खूब प्रदूषण बढ़ रहा है। यदि आप अपने वाहनों का सही से ख्याल रखें और समय–समय पर प्रदूषण की जाँच करवाऐ तो आप पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण में अपना योगदान दे सकते है।

संदर्भ

1. संग्रहीत प्रति मूल से 10 दिसम्बर, 2017 को पूरालेखित अभिगमन तिथि 31 मार्च, 2015।
2. ''पृथ्वी सम्मलेन में किया गया था देश का प्रतिनिधित्व अमर उजाला'' दैनिक समाचार पत्र अभिगमन तिथि 01.07.2020।
3. बेवदुनिया ''पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती हमारी भारतीय परम्पराऐं।'' अभिगमन तिथि– 01.07.2020।
4. प्रतियोगिता दर्पण।